एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खरीफ में मक्का की उन्नतशील खेती

(*अंकित कुमार[1] एवं जगवीर सिंह[2])
[1]डॉ. खेम सिंह अकाल कृषि महाविधालय, इटरनल यूनिवर्सिटी, बरु साहिब, सिरमौर, (हिमाचल प्रदेश)
[2]कृषि विज्ञानं केन्द्र, पचपेड़वा, बलरामपुर, (उत्तर प्रदेश)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: jayant50ak@gmail.com

किसान भाई खरीफ मक्का उत्पादक कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं मक्का विश्व में खाद्यान्न फसलों की रानी कहां जाता है क्योंकि इसका उत्पादन क्षमता खाद्यान्न फसलों में सबसे अधिक होता है। पहले मक्का को विशेष रूप से गरीबों का भोजन माना जाता था। मक्का को मानव आहार के साथ-साथ चारे व दाने के रूप में उपयोग में लिया जाता है, अधिक आर्थिक मुनाफा प्राप्त करने के लिए शहरों के आस-पास हरे भुट्टो के लिए मक्का की खेती करें। वर्तमान में मक्का की विभिन्न प्रजातियों का उत्पादन किया जा रहा है जैसे पॉपकॉर्न, स्वीटकॉर्न एवं बेबीकॉर्न आदि। भारत में लगभग 75% मक्का की खेती खरीफ के मौसम में होती है विश्व में भारत का मक्का उत्पादन में पांचवा स्थान है।

भूमि का चयन एव तैयारी:-मक्का की खेती लगभग सभी प्रकार की मृदा में सफलतापूर्वक की जा सकती है। इसके पश्चात उपयुक्त मृदा बुलई मटियार से दोमट मृदा जिसमें जल निकास व वायु संचार की उत्तम व्यवस्था हो तथा पीएच मान 6.5 - 7.5 के बीच मक्का सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है।

बुआई का समय:-मक्का की खरीफ ऋतु की खेती मानसून पर निर्भर करती है। लेकिन सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर खरीफ में बुवाई का उपयुक्त समय मध्य जून से मध्य जुलाई तक कर सकते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों व कम तापमान वाले क्षेत्रों में बुआई मई के अंतिम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है।

बीज दर व अंतरण:-सामान्यता मक्का की एक हेक्टर खेती के लिए लगभग 20 - 25 किलोग्राम बीज उपयुक्त होता है तथा पौधों में भूतों की अच्छी गुणवत्ता के लिए पौधा से पौधा 20-25 सेंटीमीटर वह लाइन से लाइन 60-75 सेंटीमीटर अंतरण रखते हैं

बीज उपचार:-विभिन्न प्रकार के रोग बचाव के लिए बीज को बुआई से पहले कैप्टन व बावस्टीन के बराबर अनुपात का 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करते हैं

बुवाई की विधि:-मक्का की फसल स्वस्थ व अधिक उत्पादन दे, इसके लिए पौधों की जड़ों को पर्याप्त नमी मिलती रहे और जलभराव की समस्या से बचने के लिए उचित है कि फसल को मैडों पर बोया जाए। बुवाई पूर्वी पश्चिमी दिशा की मेड़ों के दक्षिणी भाग में करनी चाहिए, ताकि सूर्य का प्रकाश उचित मात्रा में प्रत्येक पौधे को प्राप्त होता रहे।

अन्तः फसल:-अंता फसल एक तरह का बीमा है जो किसान को जैविक व अजैविक आपदाओं से बचाता है मक्का के साथ कम अवधि में पकने वाली दलहनी फसलें जैसे मुंग, उर्दू, लोबिया अरहर, तिलहनी फसलें जैसे मूंगफली सोयाबीन तथा सब्जियां एवं फूल आदि फसलो को उगाआ कर अधिक अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं।

पोषण प्रबंधन:- मक्का की फसल बुआई से पहले मिट्टी की जांच कराएं, क्योंकि भारतीय महिलाओं में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश के अतिरिक्त कुछ सूक्ष्म तत्व जैसे लोहा व जस्ता आदि की विभिन्न क्षेत्रों में कमी देखी गई है। किसान फसल की बुवाई से 10 - 15 दिन पूर्व खेत में भली-भांति सड़ी हुई 10 से 12 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिला देनी चाहिए और 150-180 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60-70 किलोग्राम फास्फोरस, 60-70 किलोग्राम पोटाश तथा 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करें।

जल प्रबंधन:-मक्का की फसल को पूरे जीवन चक्र में 50 - 60 सेंटीमीटर पानी की आवश्यकता होती है लेकिन नर फूल व मादा फूल की क्रांतिक अवस्था में सिंचाई करना आवश्यक है। मक्का एक ऐसी फसल है जो ने सूखा सहन कर सकती है और ना ही अधिक पानी सहन कर पाती है अतः खेत में जल निकास के लिए नालिया बुवाई के समय ही तैयार कर देनी चाहिए और समय पर अतिरिक्त पानी खेत से निकाल देना चाहिए। हालांकि मक्का में जल प्रबंधन मुख्य रूप से मौसम पर निर्भर करता है।

खरपतवार नियंत्रण:- खरीफ के मौसम में खरपतवार ओं की समस्या अधिक देखी गई है। जिसके कारण उपज में 40-50% तक का नुकसान हो सकता है मक्का के कुछ मुख्य खरपतवार जैसे सामा, मकरा, गूज घास, चौलाई और हजारदाना आदि। लेकिन समय रहते खरपतवार नियंत्रण अति आवश्यक है। शाकनाशी रसायन जैसे एट्राजीन या ट्रेफाजीन 50% डब्लू पी की 1-1.5 किलोग्राम मात्रा को लगभग 600-800 लीटर पानी मे घोलकर बुवाई के तुरन्त बाद छिडकाव करना चाहिए। मृदा सतह पर छिडकाव के समय नमी होना अत्यन्त आवश्यक है।

फसल सुरक्षा:-मक्का में लगने वाले कीट तना भेदक, दीमक तथा अन्य बीमारियां लीफ ब्लाइट, पीलीसौरा रस्ट, वृन्तसडन व मृदुल रोमिल आसिता मुख्य है। सर्वप्रथम फसल सुरक्षा हेतु रोग व कीट प्रतिरोधक बीज का उपयोग करना चाहिए इसके पश्चात की रोकथाम के लिए इन्डोसल्फान 35 सीसी को 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें दीमक के लिए क्लोरपाइरीफास से बीज उपचारित करें रोग की रोकथाम के लिए जिनेब 2-4 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 8-10 दिन के अंतराल में छिड़काव करें।

कटाई व उपज:-जब भुटटेको ढकने वाली पत्तियां हरी और नमी 60% से अधिक हो, तो हरी भुट्टे के लिए उपयुक्त समय है। लेकिन जब भुट्टो को ढकने वाली पत्तियां पीली पड़ने लगे तब मक्का की कटाई करनी चाहिए। अच्छा होगा अगर भुट्टो को सेलिंग के पहले धूप में सुखाया जाए और दानों में 13 - 14% नमी होने पर सेलिंग की जाए। मक्का की फसल में उपयुक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, कुल उत्पादन 20 - 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर सकते हैं।